◆ भारतीय संस्कृति ◆

मानव शरीर की विशिष्टताएँ क्या हैं?

डॉ. शिवकुमार ओझा

Scanned by CamScanner

विषय सूची

क्रमांक		विषय	पृष्ठ संख्या
		प्राक्कथन	5
1.		विषय प्रवेश	7
2.		"शरीर" किसे कहते ?	11
	2.1	चेष्टा, इन्द्रियाँ और सुख-दुःख का निवास-स्थान शरीर	11
	2.2	हड्डी-मांस, हाथ-पैर, मैं-मेरा, लोभ आदि का आश्रय-स्थल शरीर	11
	2.3	शरीर है भोगों का घर, धर्मशाला	11
	2.4	शरीर को देह (ढ़ेर) भी कहते	11
	2.5	जो नष्ट हो जाए वह "शरीर"	12
3.		इन्द्रियाँ	13
	3.1	"इन्द्रिय" पद का अर्थ	13
	3.2	पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ - आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा	14
	3.3	पाँच कर्मेन्द्रियाँ - मुख, हाथ, पैर, उपस्थ, गुदा	15
	3.4	इन्द्रियों की विशेषता	15
4.		चार अन्तःकरण	18
	4.1	अन्तःकरण क्या है?	18
	4.2	मन	19
	4.3	बुद्धि	24
	4.4	चित्त	27
	4.5	अहंकार	36
	4.6	विशेष बात	41
5.		प्राण	43
	5.1	प्राण क्या है?	43

Scanned by CamScanner

	5.2	पाँच प्राण - प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान	45
	5.3	पाँच उपप्राण - नाग, कर्म, कृकर, देवदत्त, धनंजय	46
	5.4	प्राण के पर्यायवाची	47
	5.5	प्राण के सम्बन्ध में अन्य तथ्य	48
6.	**हृदय**		**50**
	6.1	हृदयदेश मस्तिश्कगत है, जहाँ है आत्मा का निवास	50
	6.2	हृदय को ब्रह्मगुहा, ब्रह्मयोनि, ब्रह्मपुर आदि भी कहते	50
	6.3	"हृदय" शब्द की निरुक्ति है "हृदि अयम्"	50
7.	**मनुष्य के तीन शरीर - स्थूल, सूक्ष्म, कारण**		**51**
	7.1	स्थूल-शरीर	51
	7.2	सूक्ष्म-शरीर	52
	7.3	कारण-शरीर	55
	7.4	तीनों शरीरों से सम्बन्धित अन्य तथ्य	57
8.	**मनुष्य भारीर के पाँच कोश**		**59**
	8.1	कोशों का स्वरूप	59
	8.2	अन्नमय-कोश	59
	8.3	प्राणमय-कोश	60
	8.4	मनोमय-कोश	61
	8.5	विज्ञानमय-कोश	62
	8.6	आनन्दमय-कोश	63
	8.7	पाँच कोशों से सम्बन्धित अन्य तथ्य	64
9.	**मनुष्य की चार अवस्थाएँ**		**67**
	9.1	जाग्रतावस्था	67
	9.2	स्वप्नावस्था	67
	9.3	सुषुप्तावस्था	70
	9.4	तुरीयावस्था (चौथी अवस्था)	75

Scanned by CamScanner

	9.5	अवस्थाओं के सम्बन्ध में अन्य तथ्य	76
10.	**मानव-शरीर में अतीन्द्रिय नाड़ियाँ एवं चक्र**		**77**
	10.1	नाड़ियों का स्वरूप	77
	10.2	मुख्य नाड़ियाँ	78
	10.3	इडा, पिंगला और सुशुम्णा नाडियों के कार्य	79
	10.4	चक्रों का स्वरूप	80
	10.5	मुख्य चक्रों के नाम तथा उनके स्थान	81
11.	**मानव-शरीर के द्वार**		**83**
	11.1	शरीर के नौ द्वार	83
	11.2	शास्त्रों में भारीर के ग्यारह द्वारों का भी वर्णन	83
12.	**विभिन्न प्रकार के शरीर**		**84**
	12.1	तीन प्रकार के शरीर - देवता, मनुष्य, त्रियक	84
	12.2	भोग-देह, कर्म-देह, उभय-देह	84
	12.3	भाव-देह	85
	12.4	योनिज तथा अयोनिज शरीर	85
	12.5	नित्य-देह	85
	12.6	प्राकृत-देह	86
	12.7	निर्माण-शरीर	86
	12.8	पितर और देवों के दिव्य शरीर	86
	12.9	अप्राकृत-शरीर	86
	12.10	चिदानन्दमय शरीर	87
13.	**मनुष्य का व्यक्तित्व**		**88**
	13.1	मनुष्य का चार प्रकार का व्यक्तित्व	88
	13.2	मनुष्यों की श्रेणियाँ तथा सर्वश्रष्ठ मनुष्य	88
	13.3	सात्त्विक, राजस और तामस मनुष्य	90
14.	**मनुष्य-शरीर के दो प्रमुख तत्व**		**92**
	14.1	चेतन-तत्व	92

Scanned by CamScanner

	14.2	जड़-तत्व	93
15.	**पिण्ड और ब्रह्माण्ड में समानता**		**95**
	15.1	दोनों ही चेतन और जड़ के सान्निध्य से बने	95
	15.2	स्वप्न का संसार सत्य प्रतीत होना	95
	15.3	यशोदा मैया ने भारीर में विश्वरूप देखा	97
16.	**शारीरिक अवयवों के प्रति विशेष बात**		**98**
	16.1	भौतिक संस्कृति के विचार	98
	16.2	भारतीय संस्कृति के विचार	98

****

Scanned by CamScanner

प्राक्कथन

मनुष्य के स्थूल-शरीर व उसके अन्दर विद्यमान दृष्टिगोचर अवयवों से आधुनिक जगत भली-भांति परिचित है किन्तु भारीर में निहित अगोचर पदार्थों से नहीं। भिन्न-भिन्न प्रकार के मनुष्य-शरीर (जैसे प्राकृत, अप्राकृत, निर्माण, दिव्य-शरीर आदि), स्थूल-शरीर से संलग्न अन्य कई प्रकार के अदृष्ट शरीर व कोश, शरीर के अन्दर अगोचर नाड़ियों एवं चक्रों के समूह, मनुष्य-शरीर में व्याप्त चेतना की कुछ अवस्थाएँ इत्यादि गूढ़ विशयों के ज्ञान-विज्ञान से आधुनिक जगत अधिकांश में अनभिज्ञ है। शरीर के अन्दर विद्यमान ये अगोचर पदार्थ मानव जीवन में अद्‌भुत एवं अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का सामर्थ्य रखते हैं। ये पदार्थ दैवी-सम्पदा अर्जित करा सकते हैं, दिव्य-शक्तियाँ प्रदान करने का सामर्थ्य रखते हैं। अतः उनके प्रति जाने-अनजाने अज्ञानी बने रहना मूर्खता ही कहलाएगी। मानव (मनुष्य) शरीर के इन्हीं महत्वपूर्ण अंशों व उनकी विशषताओं के प्रति ध्यान आकर्शित करने हेतु प्रस्तुत पुस्तक का निर्माण किया गया है। इसके अन्तर्गत आए हुए विभिन्न विषय भारतीय सांस्कृति के अभिन्न अंग हैं जो भारतीय संस्कृति की महानता एवं विलक्षणता का दिग्दर्शन कराते हैं।

भगवद्‌कृपा से हमारी एक बृहद् पुस्तक भी है जिसका शीर्षक है- "भारतीय संस्कृति महान् एवं विलक्षण"। प्रस्तुत पुस्तक इसी बृहद् पुस्तक का अति लघु अंश है। यह द्वितीय संस्करण है जहाँ प्रथम संस्करण की त्रुटियों को सुधार लिया गया है तथा प्रकाशक एवं मुद्रक भी भिन्न हैं। लेखक ने स्वयं प्रकाशक का कार्य ग्रहण किया है, अतः प्रस्तुत पुस्तक इस प्रकाशन का प्रथम संस्करण है। प्रस्तुत पुस्तक के अन्त में आवरण पृष्ठ पर जिन सभी हमारी भारत में छपी पुस्तकों का उल्लेख है उन सभी के अब नवीन संस्करण के प्रकाशक स्वयं लेखक हैं तथा मुद्रक "त्रिकोण बुक्स" हैं। विषय के महत्व को देखकर तथा पुस्तक का मुल्य कम रखने के उद्देश्य से प्रस्तुत पुस्तक का

Scanned by CamScanner

प्रकाशन किया गया है। आशा है पाठकों के लिये यह पुस्तक रुचिकर एवं उपयोगी सिद्ध होगी। शेष भगवद्कृपा है।

– शिवकुमार ओझा

****

Scanned by CamScanner